

إِلَيْهِ يَرْدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۖ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ شَكْرٍ مِّنْ

उसीकी तरफ़ उवाला किया जाता है। एल्मे कयामतका, और नहीं निकलता कोई इल अपने भौल

الْكَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أَنْتَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۖ وَيَوْمَ

से, और नहीं डामिला छोती कोई मादा, और न जने, मगर उसके एल्ममें. और जिस दिन

يُنَادِيهِمْ آيِنُ شُرَكَائِي ۚ قَالُوا أَدْنٰكَ مَا مَنَّا مِنْ شٰهِيْدٍ ۗ

अ'वान इरमाओगा, उन्हे कि कहां हैं मेरे शरीक लोग? तो भौल परे कि डम बता युके तुजको, कि नहीं है डममें कोई गवाड (४७)

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّنْ

और भो गया उनसे जिनकी दुडाई देते थे पडले, और समज लिया कि नहीं है उनके लिये

مَرٰحِيْبٍ ۗ لَا يَسْمَعُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ ۚ وَإِن مَّسَّهُ

कोई भागनेकी जगड (४८) नहीं थकता एन्सान लवाएँ मांगनेसे, और अगर पडोथी उसे

الشَّرْفِ فَيَكُوْسُ فَنُوْطُ ۗ وَلٰكِن اَدْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ظُرْمِهِ

बुराई, तो नाउम्मीद है बेआस (४८) और अगर यभा दिया डमने उसे रडमत अपनी तरफ़से, भा'द मुसीबतके

مَسَّهُ لِيَقُوْلَنَّ هٰذَا اِلٰي ۚ وَمَا اظُنُّ السَّاعَةَ قٰآئِمَةً ۚ وَلٰكِن

जो उसे पडोथी, तो जरूर बोलेगा, कि यड मेरा डक है और मैं नहीं समजता कि कयामत काठम डोनेवाली है. और अगर मैं

تُجِعْتُ اِلٰي رَبِّيْ اِنْ اِلٰي عِنْدَا لِلْحُسْنٰى ۚ فَكُنْتُمْ مِنَ الَّذِيْنَ

वापस किया गया अपने रबकी तरफ़, तो मेरे लिये उसके पास यकीनन लवाएँ है, तो जरूर डम बता देंगे उन्हे जिन्हों

كَفَرُوْا اِبْسٰعْمِلُوْا ۚ وَلَنْذِيْقَهُمْ مِّنْ عَذٰبٍ عَلِيْلٍ ۗ ۝۵۰ وَاِذَا الْاَعْمٰنَا

ने कुफ़ किया, जो कुए उन्होंने किया. और जरूर यभाओगे उन्हे गाढा अजाब (५०) और जब नेअमत इरमाई

عَلٰى الْاِنْسٰنِ اَعْرَضَ وَكٰ اِبْجَانِيْبَهُ ۚ وَاِذَا مَسَّ الشَّرْفُ ذُوْ دُعٰءٍ

डमने एन्सान पर, तो मुंड इरे लिया, और डट गया अपनी तरफ़. और जब पडोथी उसे बुराई, तो लम्बी यौडी दुआ

عَرِيْضٍ ۗ ۝۵۱ قُلْ اَرٰءَيْتُمْ اِنْ كٰنَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ

वाला है (५१) पछी, कि "जरा लताओ कि अगर यड किताब अल्लाडकी तरफ़से है, फिर तुमने एन्कार कर दिया है उसका, तो कौन

مِّنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقٰقٍ بَعِيْدٍ ۗ ۝۵۲ سَرِيْهِمُ الْاِيْتٰنٰى

ज्यादा बेराड है उससे, जो दूर दराज ज़िदमें है" (५२) अब डम दिभा डी देंगे उन्हे अपनी निशानियां,

الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمَا أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ

उर तरफ और पुढे उन्हींमें, यहां तक कि जाहिर हो जाये उन्हें, कि बिलाशुभ यह उक है. क्या नहीं काही

يَكْفُ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝٥٦ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مَرِيئَةٍ

हैं कि तुम्हारा रब, बिलाशुभ उर अेकका गवाह है (५७) याद रभो कि वोह लोग शकमें हैं

مِنْ لِقَاءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ۝٥٧

अपने रबके मिलनेकी तरफसे. याद रभो कि वोह उर चीजको घेरे है (५४)

سُورَةُ الشُّورَى ٣٢ مَكِّيَّةٌ ٥٣

सूरअे शूरा मक्कीय्या

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

नामसे अल्लाहके बडा महदरभान बप्शनेवाला

आयात ५३ रुकूअ ५

حَمًّا ۝٥٨ عَسَىٰ ۚ كَذٰلِكَ يُوْحٰى اِلَيْكَ وَاِلٰى الَّذِیْنَ مِنْ

छा-मीम (१) ऐन-सीन-कॉफ़ (२) एसी तरह वही भेजता है तुम्हारी तरफ और उनकी तरफ, जो तुमसे पडवे

قَبْلِكَ ۗ اللّٰهُ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝٥٩ لَهُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی

हूअे, अल्लाह ईज्जतवाला हिकमतवाला (३) उसीका है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ

الْاَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝٦٠ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ

जमीनमें है. और वोही निहायत बुलन्द अजमतवाला है (४) कि इट परें सारे आस्मान अपनी

قُوَّتِهِنَّ وَالسَّمٰوٰتُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ

बुलन्दीसे, और इरिशते पाकी भोवते अपने रबकी हम्दके साथ, और मफ़िरत मांगते हैं उनके

لِسَنِّ فِی الْاَرْضِ ۗ اَلَا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝٦١ وَالَّذِیْنَ

लिये जो जमीनमें हैं. याद रभो कि बिलाशुभ अल्लाह ही गफ़ूररहीम है (५) और जिन्होंने

اِتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖ اَوْلِیَاءَ اللّٰهُ حَفِیْظٌ عَلَيْهِمْ ۗ وَمَا اَنْتَ

बना लिया है उसके बिलाइ अपने वाली, अल्लाह निगरां है उन पर. और तुम नहीं हो

عَلَيْهِمْ بِوَكِیْلٍ ۝٦٢ وَكَذٰلِكَ اَوْحٰی اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِیًّا لِّتُنذِرَ

उनके जिम्मेदार (६) और एसी तरह वही भेज हमने तुम्हारी तरफ कुरआनकी अरबी ज़बानमें, कि उर सुना दो

اَمْرًا قُرْاٰی وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ یَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَیْبَ فِیْهِ ۗ قُرْاٰی

आबादियोंकी अरब मक्काको, और उसके यो तरफ वालोंको, और उरा दो एकछा होनेके दिनसे, जिसमें कोई शक नहीं है.

فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً

कि एक जमाअत जन्नतमें और एक जमईयत जहन्नममें (७) और अगर याहता अल्लाह, तो यकीनन कर देता उन्हें

وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا

अक ही कौम, लेकिन वोह दाभिल इरमाता है जिसे याह अघनी रहमतमें. और अंधेरवालोंका न

لَهُمْ مِنْ دُونِي وَلَا تُصِيرُ ۙ أَمْ آتَخَذُوا مِنْ دُونِ آبَائِهِمْ فَاللَّهُ

कोई यार है और न मददगार है (८) क्या बना लिया उन्होंने अल्लाहके भिलाइ दूसरे वाली, तो अल्लाह ही

هُوَ الْوَالِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۙ وَمَا

वाली है, और वोह जिन्दा करेगा मुर्दोंको. और वोह हर याह पर कुदरतवाला है (९) और जिस

اِخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي

भातमें तुम लोगोंने इफ्तिलाइ किया है, तो उसका इंसवा अल्लाहके सुपुई है. यह है अल्लाह मेरा रभ,

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۙ وَاللَّيْلُ أَزْوَجًا ۙ فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ

उसी पर मेंने भरोसा किया, और उसीकी तरफ रजुअ करता हूँ (१०) बनानेवाला आरमानों और जमीनका.

جَعَلَ لَكُمْ مِنَ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ آثَرًا وَأَجَاءَ

पैदा किया तुम्हारे लिये तुम्हींसे जोड़े, और यौपायोंसे जोड़े.

يَذَرُوكُمْ فِيهِ ۙ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۙ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۙ

ईलाता रहता है तुम्हें उसी अन्दाजमें. नही है उस जैसेकी तरफ कोई. और वोही सुननेवाला देखनेवाला है (११)

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ

उसीकी हैं कुन्जियां आरमानोंकी और जमीनकी. कुशादा इरमादे रोजी जिसकी याह,

وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۙ شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا

और तंग भी करे. भेशक वोह हर अकका जाननेवाला है (१२) राह बनाई तुम लोगोंके लिये दीनकी जिसका

وَصَلَّىٰ بِهِ نُوْحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ

हुकम दिया था नूहको, और जो वही भेज हमने तुम्हारी तरफ, और जिसका हुकम दिया हमने ईब्राहीम

وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۗ كَبُرَ

व मूसा व ईसाको, कि तुम लोग दुरस्त रभो दीनको, और न इट डालो उसमें. गिरां

عَلَى الْمَشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۗ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ

گوارا مشرکوں پر جسکی तरफ बुलाते हो तुम उन्हें. अल्लाह युनवे अपनी तरफ जिसे चाहे,

وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ۚ ﴿۱۳﴾ وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا

और राह दे अपनी तरफ उसे, जो रूजूअ करे (१३) और नहीं झूट डाली उन्होंने, मगर भा'द' ठसके कि

جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًّا بَيْنَهُمْ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ

आ युका था उनके पास इलम, आपसकी जिदसे. और अगर न होती अेक बात, जो पहले हो युकी तुम्हारे रभकी

إِلَى آجَلٍ مُّسَمًّى لَّفُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكُتُبَ

तरफसे अेक भीआदे मुकरर तक, तो ज़रूर कैसला कर दिया जाता उनके दरमियान. और भेशक जो वारिष बनाअे गअे किताबके

مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ۚ ﴿۱۴﴾ فَلِذَلِكَ فَادْعُ ۗ وَ

उनके भा'द', यकीनन शकमें हैं तरदुद करनेवाले (१४) तो इसी विये फिर बुलाओ, और

اسْتَقِمْ كَمَا أَمَرْتَ ۗ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۗ وَقُلْ أَمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ

जमे रओ जिस तरफ हुकम दिया गया तुम्हें, और मत यलो उनकी प्वाइशों पर, और केह दो कि में ने मान लिया जो कुछ उतारा

اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ ۗ وَأَمَرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۗ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۗ

अल्लाहने किताब. और मुजे हुकम दिया गया है कि इन्साफ करता रहूँ तुम लोगोके दरमियान. अल्लाह हमारा रभ है और तुम्हारा पालनेवाला है.

لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۗ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۗ اللَّهُ

हमारे विये हमारे अमल हैं, और तुम्हारे विये तुम्हारे करतूत. कोठ' बडष नहीं छूटी हमारे और तुम्हारे दरमियान. अल्लाह

يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۗ وَاللَّيْلُ الْمَصِيرُ ۗ ﴿۱۵﴾ وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ

इकट्ठा करेगा हम सबको, और उसीकी तरफ फिरना है (१५) और जो दलीलबाजी करें अल्लाहके बारेमें

مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ ۗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ وَ

भा'द' उसके कि मान लिया गया है उसे, उनकी कट हुज्जती बेभुन्याह है उनके रभके नजदीक, और

عَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ ﴿۱۶﴾ اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ

उन पर गज़ब है, और उन्होंनेके विये सप्त अजाब है (१६) अल्लाह है जिसने उतारा

الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ۚ ﴿۱۷﴾

किताबको बिल्कुल दुरुस्त, और इन्साफके तराजूको. और क्या ખબर तुजे कि क्यामत नजदीक ही हो (१७)

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ

जल्दी मचाते हैं उसकी बोली, जो उसको नहीं मानते. और जो मान चुके हैं कांप रहे हैं

مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ الْأَرَانَ الَّذِينَ يُبَارُونَ فِي السَّاعَةِ

उससे. और जानते हैं कि भिलाशुभल वोल डक है. याद रभो कि जो शक करें कयामतके बारे

لَفِي صَلْبٍ بَعِيدٍ ۝١٨ اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۝ وَ

में, यकीनन दूरदराजकी बेराहीमें हैं (१८) अल्लाह लुत्फ इरमानेवाला है अपने बन्दों पर, रोजी दे जिसे चाहे, और

٢٠

هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝١٩ مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي

वोही कुव्वतवाला ठज्जतवाला है (१९) जो चाहता रहे आभिरतकी भेतीको, तो डम तरककी दें

حَرْثِهِ ۝ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي

उसे उसकी भेतीमें, और जो दुन्याकी भेती चाहता रहे, दे देंगे डम उसे उससे, और नहीं है उसका

الْآخِرَةِ مِنْ تَصِيبٍ ۝٢٠ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ

आभिरतमें कोठ छिस्सा (२०) क्या उनके कुछ शरीक हैं कि राड बना दी उनके लिये दीनकी,

مَا لَهُمْ يَأْذَنُ بِهِ اللَّهُ ۝ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ ۝ وَ

जिसकी नहीं ठज्जत दी अल्लाहने. और अगर न हो चुकी होती हैसले के मुतअल्लिक बात, तो जरूर हैसला कर दिया जाता उनका. और

إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝٢١ تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ

बेशक अधेरवालोंके लिये दुभवाला अजाब है (२१) देभोगे ठन जालिमोंको सडमे डूअे,

مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقَعُ بِهِمْ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

जो कमाठ कर रभी है, और वोल होनेवाला ही है उन्हें. और जो ठमान लाअे और नेकियांकी,

فِي رَوْضَاتٍ الْجَنَّاتِ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۝ ذَلِكَ هُوَ

वोल जन्तकी हुलवारियोंमें हैं. उनके लिये है जो चाहें अपने रभके यडां. यही बडा

الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝٢٢ ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ

इज्जल है (२२) यड है जिसकी भुशभभरी देता है अल्लाह अपने बन्दोंको, जो

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۝ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ

ठमान लाअे और नेकियांकी. डेड दो, कि “में नहीं मांगता तुमसे उस पर कोठ अज, मगर दोस्ती

فِي الْقُرْبَىٰ ۖ وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا إِنَّ اللَّهَ

कराहतदारोंकी।” और जो कमाले पुभीको, बढ़ा देंगे हम उसके लिये उसमें पुभीको. बेशक अल्लाह

عَفُورٌ شَكُورٌ ۚ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ فَإِنْ يَشَأْ

मज्फिरत करमानेवाला कद्र करमानेवाला है (२३) क्या यह लोग केहेते हैं कि बोडतान बांधा है अल्लाह पर जूट, तो अगर अल्लाह चाहे, तो

اللَّهُ يَخْتَمُ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۖ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحْيِي الْحَقَّ بِكَلِمَاتِ

छिंजतकी मोडर लगादे तुम्हारे दिल पर. और मिटा देता है अल्लाह बातिलको, और दुरुस्त रचता है उकको अपनी बातोंसे.

إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۚ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ

बेशक वोड जाननेवाला है सीनोंकी बात (२४) वोही है जो कबूल करमाता है तौबाको अपने

عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۚ وَيَسْتَجِيبُ

बन्दोंसे, और दरगुजर करमाये गुनाहोंसे, और जाने जो तुम लोग करो (२५) और हुआ कबूल करमाये

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَ

उसकी जो ईमान ला चुके और नेकियांकी, और तरक्की दे उन्हें अपने इज्जसे. और

الْكُفْرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ

काकिरोंके लिये सप्त अजाब है (२६) और अगर कुशाहा करमा देता अल्लाह रोजीको अपने सारे

لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ

बन्दोंके लिये, तो ज़र सरकश हो जाते जमीनमें, लेकिन उतारता रहता है अल्लाह जिस कद्र चाहे. बेशक वोड अपने बन्दों

خَبِيرٌ بَصِيرٌ ۚ وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ سَمَاءٍ مِّنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا

से बाबुबर और निगरां है (२७) और वोही है जो उतारे बारिशको, उसके बाद कि नाउम्मीद हो गये लोग,

وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۗ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۚ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ

और फैला दे अपनी रहमतको. और वोही सभका वाली उम्हवाला है (२८) और उसकी निशानियोंसे है पैदाईश

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ دَابَّةٍ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ

आस्मानोंकी और जमीनकी, और जो कुछ फैला रचा है उनमें चलनेवाले. और वोड उनके ठकड़ा करने पर

إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۚ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ

जब चाहे कुदरत रचनेवाला है (२९) और जो पड़ोयी तुम्हें कोई मुसीबत, तो उसकी सभबसे है जो कमाईकी

ۚ

أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۗ

تुम्हारे हाथोंने, और मुआफ़ करमाता है बख़्त कुछ (३०) और नही छे तुम बेकाबू कर देनेवाले ज़मीनमें.

وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ قَرْنٍ وَلَا نَصِيرٍ ۚ ۝۳۱ وَمِنَ آيَاتِ الْجَوَارِ

और नही है तुम्हारा अल्लाहके बिलाफ़ कोर्र यार और न मददगार (३१) और उसकी निशानियोंसे हैं

فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۚ ۝۳۲ إِنْ يَشَأْ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَنَ سَائِدًا

यलनेवाली दरियामें, जैसे पहाड (३२) अगर याहे तो रोकटे उवाको, तो रूकी रह जाअें दरिया

عَلَى ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۚ ۝۳۳ أَوْ

की सतह पर. बेशक उसमें ज़रूर निशानियां हैं उर बडे सभ्रवाले, बडे शुक्रगुजारके लिये (३३) या

يُوقِفُهُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۚ ۝۳۴ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ

उलाक कर दे उन्हें जो लोगोंने कमा रभा है, और मुआफ़ करमादे बख़्त कुछ (३४) और बता दे उन्हें जो कटहुज्जती करें

فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِّنْ حَافِيٍّ ۚ ۝۳۵ فَمَا أَوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ

उमारी आयतोंमें, कि नही है उनके लिये कोर्र भागनेकी जगह (३५) तो जो कुछ दिया गया है तुम लोगोंको, तो वोह पूंज है

الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ

दुन्यावी जिन्दगीकी. और जो कुछ अल्लाहके यहाँ है, बख़्त बेउतर है, और बाकी रहनेवाली है उनके लिये जो मान गये और

رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۚ ۝۳۶ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ

अपने रभ पर भरोसा रभें (३६) और जो बया करें कभीरा गुनाहोंसे और बेशर्मियों

وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ۚ ۝۳۷ وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَ

से, और जब गुस्सा आया लोगों पर तो बमश दें (३७) और जिन्होंने कबूल कर लिया अपने रभको और

أَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ

पाबन्दीकी नमाजकी, और उनका काम मशवरा कर लेना है आपसमें. और उससे जो रोजी दी उमने

يُنْفِقُونَ ۚ ۝۳۸ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۚ ۝۳۹

भैरात करते रहें (३८) और वोह जिन्हें पछोयी बगावत, तो वोह बदला दें (३९)

وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَىٰ

और बुराईका बदला उसीके बराबरकी बुराई है. तो जिसने मुआफ़ कर दिया और सुल्ह कर ली, तो उसका अज्ज अल्लाह



تَكْبِيرٌ ﴿۴۷﴾ فَإِنْ أَعْرَضُوا فَأَمَّا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۗ إِنْ عَلَيْكَ

अजाब रोकनेवाला।” (४७) तो अगर उन लोगों ने मुंड डेर लिया, तो हमने नहीं भेजा तुम्हें उनका जिम्मेदार निगरानां. तुम पर अस

إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَفَرِحَ بِهَا ۗ وَإِن

पैगाम पलोंया देना है. और बेशक हमने जब यभाया ईन्सानको अपनी तरफसे रहमत, तो मुश हो गया उससे. और अगर पलोंये

تُصِبُّهُمْ سَيِّئَةٌ يَبَاطُ قَدَّ مَتَّ أَيْدِيَهُمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ﴿۴۸﴾ لِلَّهِ

उन्हें कोई मुसीबत, भ सबभ उसके जो पडवे भेज युके उनके हाथ, तो बेशक ईन्सान बडा नाशुका है (४८) अल्लाह हीकी

مُلْكِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ يُخَلِّقُ مَا يَشَاءُ يُهَبِّ لِسِنَ يَشَاءُ ۗ إِنَّا نَا

है बादशाही आस्मानों और जमीनकी. पैदा करमाओ जो याहे. और हे जिसे याहे भेटियां,

وَيُهَبِّ لِسِنَ يَشَاءُ الدُّكُورَ ﴿۴۹﴾ أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَّا نَا وَنَجْعَلُ

और हे जिसे याहे भेटे (४९) या जोडे हे उन्हें भेटे और भेटियां और कर हे

مَنْ يَشَاءُ عَقِيْبًا ۗ إِنَّهُ عَلَيْهِمْ قَدِيْرٌ ﴿۵०﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ

जिसे याहे बांज. बेशक वोह ईल्मवाला कुदरतवाला है (५०) और नहीं हो सकता किसी बशरी सूरतवालेके लिये,

اللَّهُ إِلَّا وَحِيًّا أَوْ مِنْ وَرَائِي حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ

कि 'भात करे उससे अल्लाह, मगर प्वाभ व भेदारीकी वही या पर्दा जाड व जलालसे या भेज हे कोई कासिद, तो वही पलोंयाओ

بِأَذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيْمٍ ﴿۵१﴾ وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا

उसके हुकमसे जो वोह याहे. बेशक वोह बुलन्दीवाला खिकमतवाला है (५१) और ईसी तरह वहीकी जान भेज हमने तुम्हारी तरफ

مِّنْ أَمْرِنَا ۗ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيْمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ

अपने हुकमसे. “तुम क्यास नहीं कर सकते थे कि क्या थीज है किताबुल्लाह, न ईमानका, लेकिन बना दिया हमने

نُورًا تَهْدِي بِمِنْ نَسْنَاءٍ مِنْ عِبَادِنَا ۗ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ

ईस कुरआनको नूर, राड देते हैं उससे जिसे याहें अपने बन्दोंसे.” और बेशक तुम डिदायत देते हो सीधी

مُسْتَقِيْمٍ ﴿۵२﴾ صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ

राडकी (५२) अल्लाहकी राड. कि उसीका है जो कुछ आस्मानोंमें है और जो कुछ जमीनमें है.

إِلَّا إِلَىٰ اللَّهِ تُصِيْرُ الْأُمُورَ ﴿۵३﴾

याद रभो कि अल्लाहकी तरफ किर कर जाते हैं सारे काम (५३)



وَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرْنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿۱۳﴾

اور کہو کہ "پاکی ہے اُسکی جس نے کابو میں کر دیا ہمارے اُسکو، اور نہ ہے ہم اُسکے بولنے والے (۱۳) اور

إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿۱۴﴾ وَجَعَلُوا آلَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنْ

بہشک ہم اپنے رب کی طرف لوٹنے والے ہیں" (۱۴) اور بنا لیا اُسکے لیے اُسکے بندوں سے جوڑ. بہشک

الْإِنْسَانَ لِكُفْرٍ مُّبِينٍ ﴿۱۵﴾ أَمْ اِتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ

انسان کو کفر کی بنا پر (۱۵) کیا اُس نے لیا جو مفلک فرماتا ہے اُس سے بہتیاں، اور یوں رہا ہے

بِالْبَنِينَ ﴿۱۶﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ

تو بچوں کے لیے (۱۶) اور جب کسی کو بشارت ملے تو وہ بے جا ہنس مچا کر کہتا ہے،

وَجْهًا مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿۱۷﴾ أَوْ مَنْ يُوَسْوِسُ فِي الْغَيْبِ وَهُوَ فِي

تو سارا دین اُسکا بے جا ہنس مچا کر کہتا ہے اور وہ بے جا ہنس مچا کر کہتا ہے (۱۷) کیا جس کی نشوونما کی جائے گاہوں میں، اور وہ

الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿۱۸﴾ وَجَعَلُوا السَّلِيكَتَ الَّذِينَ هُمْ عِبْدُ

بچوں میں سے ایک نسل (۱۸) اور کرار دیا ان لوگوں کو فرشتوں کو، جو بھلا

الرَّحْمَنِ إِنَّا كَأُشْهُدٍ وَآخِلْفَهُمْ سَتَكْتَبُ شَهَادَتَهُمْ وَيَسْأَلُونَ

مہربان کے بارے میں اور تم، کیا انہوں نے دیکھا ہے اُن کی پیدائش. اب لکھ لیا جائے گی اُن کی گواہی، اور پوچھیں گے

وَقَالُوا الْوَيْسَاءُ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ مَالَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ

اور یہ لوگ بولے، "اگر یاد تھا بھلا مہربان، تو ہم نہ پوجتے اُنہیں." یہی اُنہیں اُسکا کوئی علم

إِنَّ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿۲۰﴾ أَمْ اتَيْنَهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ

یہ لوگ بس جھوٹے کہتے ہیں (۲۰) کیا دے رہی ہے ہم نے اُنہیں کوئی کتاب اُسکے پہلے سے، تو وہ اُس سے

مُسْتَمْسِكُونَ ﴿۲۱﴾ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ

دھلیل چلنے والے ہیں (۲۱) بلکہ وہ تو کہتے تھے، "ہم نے اپنے اجداد کو اسی پر پایا، اور ہمیں بھی

آثَرِهِمْ مُهْتَدُونَ ﴿۲۲﴾ وَكَذَلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ

اُن کے نیکو کام پر چلنے والے ہیں" (۲۲) اور اسی طرح یہی ہم نے تم سے پہلے کسی آبادی میں کوئی

مِّنْ تَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا

دہانے والے، مگر کہا اُسکے آسودہ لوگ، "ہم نے پایا اپنے اجداد کو اسی پر، اور ہم

عَلَىٰ أَثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ﴿۳۲﴾ قُلْ أَوَلَوْ جِئْتُمْ بِآهْدَىٰ مِمَّا وَجَدْتُمْ

उनके निशाने कदम पर पीछे पीछे हैं (३२) उन्होंने जवाब दिया, कि क्या गो हम ले आओ तुम्हारे पास निहायत बड़ी छिदायत उससे,

عَلَيْهِ آبَاءُكُمْ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَفَرُونَ ﴿۳۳﴾ فَاَنْتَقَسْنَا مِنْهُمْ

जिस पर पाया तुमने अपने बापदादोंको? सब भोस कर रह गये कि हम सब उससे, जिसके तुम पैगम्बर बनाये गये हो ईश्वरी हैं (३३) तो बहला लिया हम

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿۳۴﴾ وَاذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ

ने उनसे, तो देख लो कि कैसे हुआ अन्जाम जुटवाने वालोंका (३४) और जब कि कड़ा ईब्राहीम ने अपने बाबासे और अपनी

وَقَوْمِهِ إِنِّي أَبْرَأُ مِمَّا تَعْبُدُونَ ﴿۳۵﴾ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿۳۶﴾

कैमसे, कि बिलाशुबह में भेजकर हूँ उससे जिसे तुम लोग पूजते हो (३५) मगर वोह जिसने पैदा कर माया मुझे, कि बिलाशुबह वोह राह देगा मुझे (३६)

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿۳۷﴾ بَلْ مَتَّعْتُ

और बना रखा उसे भाकी रहनेवाली बात अपने भा'दवालोंमें, कि वोह आज आओ (३७) बल्कि माल व मताअ दिया

هُؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿۳۸﴾ وَلَمَّا

हमने उन्हें, और उनके बापदादोंको, यहाँ तक के आ गया उनके पास तक, और साफ साफ बतानेवाला रसूल (३८) और जब

جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿۳۹﴾ وَقَالُوا لَوْلَا

आ गया उनके पास तक, तो बोले कि यह जादू है, और हम भेशक उसके ईश्वरी हैं (३९) और बोले, कि "क्यों न

نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقَرِيبَاتِ عَظِيمٍ ﴿۴۰﴾ أَمْ هُمْ

नाजिल किया गया यह कुरआन किसी बड़े आदमी पर ? दोनों आबादियोंसे" (४०) क्या यह लोग

يَقْسُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ﴿۴۱﴾ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي

भांटते हैं तुम्हारे रबकी रहमतको ? हमने भुद भांटा है उनके दरमियान, उनके सामाने जिन्दगीको

الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ

दुन्यावी जिन्दगीमें, और ठीया किया अकको दूसरे पर बढात कुछ, ताकि बनाओ

بَعْضُهُمْ بَعْضًا سَخِرَ لِيَا وَرَحْمَتِ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿۴۲﴾

रभमें अक दूसरेको दभता हुआ. और तुम्हारे रबकी रहमत बेहतर है उससे, जो वोह जमा जथा करते रहते हैं (४२)

وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِنِ يَكْفُرُ

और अगर न होती यह बात कि दाभिल हो जाओगे सब लोग, अक ही उनकी जमईयतमें, तो बना देते हम उनके लिये जो ईश्वर करें

الزخرف ۴۳



مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا يُعْبَدُونَ ﴿٤٦﴾

भेजा तुमसे पहले अपने रसूलोंसे, कि क्या करार दिया था हमने भुदाअे रहमानके भिलाक कुछ और मा'बूद, जिसे पूजा करे (४५)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

और भेशक भेजा हमने मूसाको अपनी निशानियोंके साथ फिरओन और उसके सरदारोंकी तरफ, तो उन्होंने कहा

رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٨﴾

कि भिलाशुभमें रसूल हूं रबुल आलमीनका (४६) तो जब ले आये उनके पास हमारी निशानियां, अब वोह उसके हंस रहे हैं (४७)

وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ بِالْعَذَابِ

और नहीं दिभाते हम उन्हें कोई निशानी, मगर यह बड़ी होती पडलीसे. और गिरफ्तार किया हमने उन्हें दुभमें,

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهُ السَّحِرُ ادْعُ لِنَارِكَ بِمَا عَاهَدَ

कि तौभा कर डालें (४८) और वोह सब बोले, कि “अे जादूगर, हुआ कर दो हमारे लिये अपने रबसे वसीलेसे, उसके जो अहद

عِنْدَكَ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ

रभा है तुम्हारे पास. भेशक हम राड पर आ जानेवाले हैं” (४९) फिर जब दूर कर दिया हमने उनसे अजाबको, अब वोह अहदशिकनी

يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾ وَتَأْدَىٰ فِرْعَوْنَ فِي قَوْمِهِ قَالَ يُقَوْمِ أَلَيْسَ لِي

कर रहे हैं (५०) और पुकार लगाई फिरओनने अपनी क्रोममें, बोला, कि “अे क्रोम क्या नहीं है मेरे

مُلْكٍ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾

लिये मिस्त्रकी शाही और यह नहरें ? बहती रहती हैं मेरे नीचे. तो क्या तुम लोग नहीं देभा करते (५१)

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ مِثْلُ آبٍ مُسْكِينٍ ۗ وَلَا يَكَادُ بِيِّنَ ۗ فَلَوْلَا

या मैं ही बेहतर हूं उससे जो जलील है.. और बात साफ़ करता मा'लूम नहीं होता (५२) तो क्यों नहीं

أَلْقَىٰ عَلَيْهِ آسُورَةً مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلِكُ نَقْتَرِينَ ﴿٥٢﴾

डाल दिये गये उन पर सोनेके कंगन ? या आते उसके साथ इरिशते महदगर ? दर वक्तके साथी” (५३)

فَأَسْخَفَ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِيقِينَ ﴿٥٣﴾ فَلَمَّا

तो उसने बना दिया कम समज अपनी क्रोमको, तो सबने कडा माना उसका, भेशक वोह नाइरमान लोग थे (५४) तो जब वोह लोग

أَسْفُوتًا اتَّقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٤﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا

गजबमें ले आये हमको, तो बटला लिया हमने, युनान्चे डिभो दिया हमने उन सबको (५५) तो कर दिया हमने उन्हें पुरानी कडानी,



الْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾ يُعْبَادُ لَا خَوْفَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَخْرَبُونَ ﴿٤٧﴾

अल्लाहसे डर जानेवाले (६७) मुष्फातिबीन उसके, कि अँ मेरे बन्दो न तुम पर कोर डर है आज, और न तुम रञ्छदा हो (६८)

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٤٨﴾ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَ

जो मान गअे थे उमारी आयतोंको, और मुसल्मान थे (६९) दाबिल हो जन्नतमें, तुम और

أَزْوَاجِكُمْ تُخْبَرُونَ ﴿٤٩﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ

तुम्हारी भीबियां, तुम लोग भुश किये जाओगे (७०) दौर यलाया जाओगा उन पर सोनेके पियावों और सागरोंका.

وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥١﴾

और उसमें है जिस चीजको याहे उनका ज, और मजा दें आंभें. और तुम उसमें हमेशा रहनेवाले हो (७१)

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ

और यह जन्नत है, जिसके वारिष तुम बनाओ गअे, असबब ठन आ'मालके जो करते थे (७२) तुम्हारे लिये ठसमें मेवा है

كَثِيرَةٌ مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ الْمَجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّهِينٍ ﴿٥٤﴾

बकधरत, कि उनमेंसे भाओगे (७३) बिलाशुबल मुजरिमें कुङ लोग, जलनमके अजाबमें हमेशा परे रहनेवाले हैं (७४)

لَا يُفْتَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا

नहीं तफ्दीककी जाओगी उनसे, और वोड उसमें बेआस हैं (७५) और डमने ज़्यादती नहीं करमाँ उन पर, लेकिन वोड भुड

هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٥٦﴾ وَتَادُوا إِلَيْكَ لِيُقْضَ عَلَيْكَ رِبِّكَ قَالَ إِن كُنتُمْ

ही आबिम थे (७६) और पुकार मथाँ उन्हींने, कि "अँ मालिक, मार डाले डमें तुम्हारा रब," उसने जवाब दिया कि "तुम लोग ठसी

مُكْتَبُونَ ﴿٥٧﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كُرْهُونَ ﴿٥٨﴾

तरड हमेशा रहनेवाले हो" (७७) बेशक लाओ डम तुम्हारे पास डक, लेकिन तुम्हारे भोडतेरे डकसे नागवारी रबनेवाले हैं (७८)

أَمْ أَمْرُومًا أَمْ رَأْفَاتًا مُّبْرَمُونَ ﴿٥٩﴾ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سُرْمَهُمْ

क्या उन्हींने कल्ल तेकर लिया है किस्ती अम्रको, तो बिलाशुबल डम भी कल्ल तेकर लेनेवाले हैं (७९) क्या भयाल करते हैं कि डम नहीं सुनते उनके राजको,

وَتَجْؤُهُمْ طَبْلَىٰ وَرُسُلْنَا لَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٦٠﴾ قُلْ إِنْ كَانَ

और उनके बाडभी मश्वरेको? क्यूं नहीं! डालांकि डमारे कासिड उनके पास लिभते रहते हैं (८०) डेड दो, कि "अगर डोता भुदाओ रडमान

لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَبْدِينَ ﴿٦١﴾ سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ

के लिये भय्या, तो मैं डोता सभसे पडला पुजरी (८१) पाकी है आस्मानों



إِنَّا كُنَّا مُرْسَلِينَ ۝ رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۗ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۙ

बेशक हम भेजनेवाले हैं (५) रहमत तुम्हारे रबकी तरफसे. बेशक वोही सुननेवाला जाननेवाला है (६)

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۙ

पालनेवाला आस्मानों और जमीन और उनके दरमियान जो कुछ है सबका.. अगर तुम यकीन करो (७) नहीं है कोई

إِلَّا الْهُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۗ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولِينَ ۗ بَلْ هُمْ

पूजनेके काबिल, सिवा उसके, वोड जिलाता है और मारता है. तुम्हारा रब, और तुम्हारे अगले बापदादोंका रब (८) बल्कि वोड शक

فِي شَكِّ يَلْعَبُونَ ۙ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۙ

में पडे भेल रहे हैं (९) तो धनितार करो उस दिनका, कि वे आयेगा आस्मान धुवां टिभाई पडनेवाला (१०)

يَغشى النَّاسَ ۗ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۙ رَبَّنَا اكشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ

छा जायेगा लोगों पर. यह है दुभवाला अजाब (११) परवरदिगारा दूर करदे हमसे इस अजाबको,

إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۙ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرَسُولِهِمْ وَكَفَرُوا بِهِ فَأَعْتَدْنَا لَهُمُ الْعَذَابَ الَّذِي لَمْ يَرْجُوا وَكَانُوا بِآيَاتِنَا

बेशक हम माने लेते हैं (१२) उन्हें कहां नसीहत मानना, डावांकि आया उनके पास रसूल, साइ साइ बतानेवाला (१३)

كَاذِبِينَ ۙ وَإِنَّا لَكَاثِبُونَ ۙ وَإِنَّا كَاثِبُونَ ۙ وَإِنَّا كَاثِبُونَ ۙ

किर वोड किर गये उससे, और “ओले कि सिभाया हुवा पागल है”.. (१४).. बेशक हम डटाये देते हैं अजाबको कुछ दिनके लिये,

إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۙ وَإِنَّا مُؤْمِنُونَ ۙ وَإِنَّا مُؤْمِنُونَ ۙ وَإِنَّا مُؤْمِنُونَ ۙ

बिलाशुबह तुम किर यही करनेवाले हो.. (१५).. जिस दिन पकड़गे हम अछोत बडी पकड़, तो बेशक हम भदला ले लेनेवाले हैं (१६)

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ۙ

और बेशक आजमाया हमने उनसे पहले किरऔनियोंको, और आया उनके पास एक रसूल मुकर्रम (१७) कि देदी

أَدُّوْا إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ ۗ إِنِّي لَكُم رَسُوْلٌ أَمِيْنٌ ۗ وَإِن لَّا تَعْلَمُوْا عَلَيَّ

मुझे अट्लाहके बन्दोंको, यकीनन में तुम्हारा अमानतदार रसूल हूँ (१८) और यह कि डींगकी न लो अट्लाह पर.

اللَّهِ ۗ إِنِّي إِلَٰهِيكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ وَإِنِّي عَدْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ

बेशक मैं ले आया हूँ तुम्हारे पास रौशन सनद (१९) और मैंने पनाह ले ली है अपने रब और तुम्हारे पालने

أَنْ تَرْجُمُوْنَ ۗ وَإِن لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِي فَاَعْتَرِوْا ۙ قَدْ عَارَفْتُمْ أَنَّىٰ

वालेकी, कि तुम संगसार कर सको मुझे (२०) और अगर तुम लोगोंने न माना मुझे, तो मुझसे दूर हो (२१) किर अर्ज किया अपने रबसे, कि

الذخيرة

هُؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿۲۲﴾ فَاسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ﴿۲۳﴾

بیلواشوبھل یھل لوگ جراتھمپेशا हें (२२) तो निकाल ले जाओ मेरे सब बन्दोंकी रातों रात, कि अउर तुम लोग पीछा किये जाओगे (२३)

وَاتْرِكْ الْبَحْرَ رَهْوًا إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُونَ ﴿۲۴﴾ كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَلْدٍ

और छोड रभो दरियाको भुली भुली राह, कि भेशक वोह लोग लशकरवाले डिभो दिये जाओगे (२४) कितने छोडे उन्होंने भाग

وَعْيُونَ ﴿۲۵﴾ وَرُؤُوسِهِمْ مَقَامِ كَرِيمٍ ﴿۲۶﴾ وَتَعْتَهُ كَانُوفِيهَا فَكِهِينَ ﴿۲۷﴾

और यशमे (२५) और भेतियां और शानदार घर (२६) और ने'मत जिसमें रहते थे भुशभुश (२७)

كَذَلِكَ تَوَّارَثْنَاهَا قَوْمًا آخِرِينَ ﴿۲۸﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَ

ऐसा ही हुवा.. और वारिष बनाया हमने उसका दूसरे लोगोंको (२८) तो न रोया उन पर आस्मान व

الْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿۲۹﴾ وَلَقَدْ فَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ

जमीन, और न मोडलत दी गर्थ उन्हें (२९) और भेशक बया लिया हमने बनी इसराएलको

الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿۳०﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا مِنَ السُّرِفِينَ ﴿۳१﴾

जलील अजाबसे, (३०) फिरओनकी तरफसे, भेशक वोह था डींग मारनेवाला, उदसे बढनेवालोंसे (३१)

وَلَقَدْ احْتَرَبْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلِي الْعَالَمِينَ ﴿۳२﴾ وَاتَّبَعْنَاهُمْ مِنَ الْآلِيَةِ

और भेशक युना हमने उन्हें जान कर सारे अडले जमाना पर (३२) और हीं हमने उन्हें निशानियां

مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿۳३﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿۳४﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا

जिसमें भुवा हुवा एन्आमी एम्तिहान है (३३) भेशक यल लोग केडते हें (३४) कि नहीं है मगर यही पडली मौत

الْأُولَىٰ وَمَا خُنُّ بِسُنْتَرِينَ ﴿۳۵﴾ فَأَتُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿۳۶﴾

हमारी, और नहीं है हम उदाओ जानेवाले (३५) तो ले आओ हमारे बापदाहोंको अगर सत्ये हो (३६)

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلُكُمْ أَهْلُكُمْ كَانُوا

क्या यल लोग बेहतरे हें, कि तब्ब, शाडे यमनकी क्रीम, और जो उनसे पडले हुओ, हमने भरबाद कर दिया उन्हें, कि वोह लोग

مُّجْرِمِينَ ﴿۳۷﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعِيبِينَ ﴿۳۸﴾

भुजरिम थे (३७) और नहीं पैदा करमाया हमने आस्मानों और जमीन, और जो उनके दरमियान है, भेवते हुओ (३८)

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۹﴾ إِنْ يَوْمَ

नहीं पैदा करमाया हमने उन्हें, मगर बिडकुल ठीक, लेकिन उनके बोडतेरे नहीं जानते (३९) भेशक ईसलेका

- ۱۴

الْفَصْلِ مِيقَاتِهِمْ اجْمَعِينَ ﴿۵۰﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَىٰ عَنْ مَوْلَىٰ

দিন, ঠন সৰকা মুকৰ্ৱশুধা বকত হে (৪০) জিস দিন ন কাম আবেগা হোস্ত কিসী হোস্তকে

شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿۵۱﴾ إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ

কুছ, ঔর ন বোহ মদে কিয়ে জাওগে (৪১) মগর জিস পর রহম ফরমায়া অব্লাহনে. বেশক বোহী ঠজুতবাবা

الرَّحِيمِ ﴿۵۲﴾ إِنَّ شَجَرَةَ الزَّقْوَمِ طَعَامٌ لِّلْأَثِيمِ ﴿۵৩﴾ كَالْمُهْلِ يَغْلِي

রহমবাবা হে (৪২) বেশক খুহডকা দরপ্ত (৪৩) গুনহগারকী গিজা হে (৪৪) জেসে পিঘলা তাংবা. জোশ মারেগা

فِي الْبُطُونِ ﴿۵৪﴾ كَغَلِيِّ الْحَمِيمِ ﴿۵৫﴾ خَذُّوْهَا فَاعْتَبُوْهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿۵৬﴾

পেটোঁম (৪৫) জেসে ঞৌবতে পানীকা জোশ (৪৬) পকডো ঠসকো, ফির ঘসীটো ঠসকো, ঠীক জহন্নমকী তরফ (৪৭)

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿۵৭﴾ ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ

ফির ডালো ঠসকে সর পর ঞৌবতে পানীকা অজাভ (৪৮) যখ. কয়া কেডনা হে, তু হী

الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿۵৮﴾ إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ مُكْتَرِبُونَ ﴿۵৯﴾ إِنَّ الْمُنْتَفِقِينَ

ঠজুতবাবা বুজুর্গ হে (৪৯) বেশক যহ হে, জিসমেঁ তুম শক করতে থে (৫০) বিলাশুভ দরনেবাবে

فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿۶০﴾ فِي جَدَّتِ وَعُيُونٍ ﴿۶১﴾ يَلْبَسُونَ مِن سُنْدُسٍ

অমনো অমানকী জগহমেঁ হেঁ (৫১) ঞাগোঁ ঔর যশমোঁমেঁ (৫২) পহনেগে রেশমী কপডে নর্ম

وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقْبِلِينَ ﴿۶২﴾ كَذَلِكَ وَرَوْنَهُمْ مَّجْرَجِينَ ﴿۶৩﴾ يَدْعُونَ

ঔর দবীজ, আমনে সামনে ঞেঁ (৫৩) ঔঁসা হী হে.. ঔর বিযাছ দিয়া হমনে উন্হেঁ বডী বডী আঁণোঁবাবী গোরিয়োসে (৫৪) তলব কর্বেগে

فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهِةٍ أَمِينٍ ﴿۶৪﴾ لَا يَدُوقُونَ فِيهَا النَّوْتِ إِلَّا النَّوْتِ

উসমেঁ হর কিস্মকা মেবা অমন ব অমানসে (৫৫) ন যধেঁগে উসমেঁ মৌত, সিবা পহলী মৌত

الْأُولَىٰ ۗ وَوَقَّعَهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿۶৫﴾ فَضَلَّاهُمْ مِنْ رَبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ

কে. ঔর অব্যা লিয়া উন্হেঁ জহন্নমকে অজাভসে (৫৬) ফজল হে তুম্বারে রহকী তরফসে. যহী হে

الْفَوْزَ الْعَظِيمَ ﴿۶৬﴾ فَاتَّسَّأَسْرَنَّهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿۶৭﴾

বডী কামযাধী (৫৭) তো বস হমনে আসান কর দিয়া ঠস কুরআনকো তুম্বারী জাযানমেঁ, কি বোহ নসীহত পকডেঁ (৫৮)

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿۶৮﴾

তো ঠন্তিআর করতে রছো, বোহ ঞী ঠন্তিআর করনেবাবে হেঁ (৫৯)



بِآيَاتٍ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُحْسِنُونَ ۝١١ اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمْ الْبَحْرَ

رہا کی آیاتوں کا، انہی کے لیے سہولت سے دہناک عذاب ہے (۱۱) اے اللہ ہے جس نے کابھوں کو دیا تو مبارک

لِتَجْرِيَ الْفَلَكَ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝١٢

داریا کو، تاکہ وہیں سے کشتیاں اُس میں اُس کے ہلکے سے، اور تاکہ تلاش کرتے رہو اُس کا فضل، اور کہ شکر ادا کرتے رہو (۱۲)

وَسَخَّرَ لَكُمْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِنْهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ

اور کابھوں کو دیا تو مبارک جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے سب اپنی طرف سے۔ بے شک اُس میں یقین

لَايَةٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝١٣ قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُ وَالَّذِينَ لَا

نشانیاں ہیں اُن کے لیے جو سوچیں (۱۳) سمجھا دو انہیں جو ایمان لا چکے، کہ ابھی دہرا کرتے رہیں انہیں، جو اُٹھیں

يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝١٤ مَنْ عَمِلَ

نہیں رہتے اے اللہ کے دنوں کی، تاکہ ہر ایک کو جو کرتا ہے (۱۴) جس نے کیا نہ

صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝١٥

کام، تو اپنے لیے کرے۔ اور جس نے کیا بُرا کام، تو اپنے لیے کرے۔ پھر تم لوگ اپنے رہا کی طرف لوٹاؤ اور آؤ گے (۱۵) اور

لَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ

بے شک ہی اُنہوں کو اپنی کتاب و حکمت و نبوت، اور روزی ہی انہیں

الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝١٦ وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ

پاکیزہ، اور بخوبی ہی اُنہوں کو تمام اہل دنیا پر (۱۶) اور ہی اُنہوں کو سادہ سادہ باتیں اُن کی

فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِمَّنْ بَعْدَ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعْثًا بَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ

تو نہیں کھٹے، مگر باہر اُس کے کہ آ چکا اُن کے پاس علم، باہمی ہٹھکی ہوا ہے۔ بے شک تو مبارک رہا

يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝١٧ ثُمَّ جَعَلْنَاكَ

کے لیے فرماؤ گے اُن کے درمیان کھمات کے دن، جس جس میں کھٹکی کرتے تھے (۱۷) پھر دیا اُنہوں

عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝١٨

تو اُن کے لیے ایک راہ پر اُن کی راہ، اور نہ اُن کی خواہشوں پر جو اُنہوں کو نہیں رہتے (۱۸)

إِنَّهُمْ لَن يَغْنَوْاكَ مِنْ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ

بے شک وہ نہ ہوا سکتے تو اُن سے کچھ نہیں۔ اور بے شک اُن کے لیے کچھ دوست ہیں،



